R.M.M. Law College Saharsa
Nareshji Anand
LL.B. Part IInd
Paper - VIth
Environmental Law

पर्यावरणीय विधिशास्त्र का अभ्युदय एवं विकास

मध्य बीसवीं शताब्दी तक सामान्यतः और उत्तर द्वितीय विश्वयुद्ध काल में विशिष्टतः विधि के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के उपायों और पर्यावरण प्रदूषण के दायित्वों के निर्धारण के प्रति वैश्विक ध्यान आकृष्ट हुआ है। पर्यावरण विधिशास्त्र का क्षेत्र उतना विस्तृत है जितना कि पर्यावरण संरक्षण एवं प्रदूषण रोकथाम विधियों की अपेक्षा– उससे भी ज्यादा विस्तृत है। पर्यावरण विधिशास्त्र पर्यावरण विधि का विज्ञान है। यह पर्यावरण से सम्बन्धित तथा पर्यावरण के बारे में अध्ययन है। इसका मुख्य उद्देश्य है कि किस तरह गुणात्मक जीवनस्तर के साथ-साथ गुणात्मक पर्यावरण का बनाया रखना सुनिश्चित किया जा।

पर्यावरण विधि का तात्पर्य ऐसी यंत्र रचना से है जो विकास और सुसंगत प्राधिकरण एवं सीमान्त नियमों में सामाजिक जीवन को सीमित बनाते। ये नियम अपेक्षित अनुमत और निषिद्ध आचरण को निर्दिष्ट

करने तथा सीमातिक्रमण करने वाले तथा दूसरों के हितों को प्रभावित करने वालों को दायित्वाधीन बनाने का कार्य करते हैं। अतः पर्यावरण विधि नियमों का वह संग्रह है जो विनिर्दिष्ट परिस्थितियों में पर्यावरण संरक्षण हेतु राज्य बहुराष्ट्रीय कंपनियों, उद्योगों और व्यक्तियों के आचरण हेतु मानदण्ड अधिरोपित करते हैं। प्रत्येक पर्यावरणीय विधि में किसी का अधिकार अथवा हित अन्तर्वलित होता है और किसी दूसरे पर दायित्व का आधरोपण होता है।

पर्यावरण विधि विस्तृत आधार से सम्बन्धित होने के कारण मुख्यतः राष्ट्रीय विधि के लक्षणों से थोड़ा भिन्न है। इसमें अंशतः राष्ट्रीय विधि और अंशतः अंतर्राष्ट्रीय विधि के लक्षण मौजूद हैं। कारण स्पष्ट है। पर्यावरण विधि राष्ट्रीय विधि पर पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण संरक्षण संबन्धी नियमों का प्रतिपादन करता है। पर्यावरण विधि राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रदूषकों एवं प्रदूषण से प्रभावित पक्षकारों के बीच संतुलन कायम रखने का प्रयास करता है।

पर्यावरण विधि का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक अभियंत्रण सुनिश्चित करना है और इस प्रक्रिया के माध्यम से परस्पर विरोधाभास वाले हितों के बीच न्यूनतम मनमुटाव के साथ सामंजस्य एवं संतुलन करना है। यही कारण है कि जल और वायु प्रदूषण के निम्न मानदण्ड

स्थापित करने वाले विधियों द्वारा सार्वजनिक स्वास्थ्य के हित में उत्पादन प्रक्रिया की स्वतंत्रता को संकुचित या नियंत्रित किया जाता है। इसी तरह प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण सम्बन्धी विधियों ने प्राकृतिक संसाधनों के शोषण के विरुद्ध कतिपय अवरोधकों का निर्माण किया है।

पर्यावरण विधि का यह अनवरत समस्या है कि किस तरह परस्पर संघर्षरत हितों का मूल्यांकन कर उन्हें संरक्षित किया जाय। इस दृष्टिकोण से भावी पीढ़ी के लिए प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं संसाधनों के शोषण के माध्यम से अधिकतर समूह लाभ की इच्छा पर वरीयमान माना जाएगा। इसका महत्व इसलिए भी बढ़ जाएगा कि मानव जाति की उत्तरजीविता हेतु उचित पारिस्थितिकीय संतुलन व्यवस्थाओं का रखरखाव आवश्यक बन गया है।

पर्यावरण विधि के अन्तर्राष्ट्रीय आयाम:-

किसी एक विशेष राज्य द्वारा उत्पन्न प्रदूषण अक्सर दूसरे राज्यों पर गंभीर प्रभाव डालता है। इसका सुस्पष्ट उदाहरण अम्ल वर्षा है। एक राज्य में स्थित उद्योगों द्वारा छोड़े गए रासायनिक गैस वायुमण्डल में ऊपर उठकर जल और सूर्य प्रकाश से रिएक्ट कर अम्ल निर्मित करते हैं। ये हवा में प्रवाहित होकर प्रारम्भिक प्रभावित स्थान से हजारों मील वर्षा के रूप में पृथ्वी पर गिरते हैं। 1970 के दशक में अम्ल

अम्ल वर्षा की समस्या की तरफ एक नये प्रदूषक की तौर पर ध्यान आकृष्ट हुआ। स्वेडन ने विरोध जताया कि उसकी बहुतायत झीलें अम्लीय हो गई हैं। इसीतरह शिकायतें नार्वे एवं अन्य यूरोपीय देशों से मिली। 1980 में जर्मनी में पेड़ विहीनता का खतड़ा बढ़ गया। निश्चित प्रदूषक स्रोतों का पता लगाना कठीन है परंतु यह निश्चित है कि विभिन्न प्रदूषक कारक एवं देश इसके जिम्मेदार हैं।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर यह भी स्पष्ट हो गया कि पर्यावरणीय समस्या का समाधान किसी एक देश द्वारा नहीं किया जा सकता। परिणामत: प्रदूषक एवं प्रदूषित राज्यों के बीच सहयोग आवश्यक है। अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण विधि के लिए आवश्यक बन गया है कि पारस्परिक राज्य उत्तरदायित्व की अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की भावना का विकास करें। अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण विधि का स्रोत संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा द्वारा पर्यावरण पर पारित प्रस्ताव स्टॉकहोम कान्फ्रेंस 1972, पृथ्वी शिखर वार्ता 1992 तथा अनेक अभिसमय एवं प्रसंविदाएँ हैं। इसके साथ ही साथ अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय, न्यायाधिकरण आदि के निर्णय भी पर्यावरण विधि के स्रोत हैं।

Scanned with CamScanner